Vol 3 Issue 3 April 2013

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 3, April. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

हिंदी नाट्य–साहित्य में राष्ट्रीय भावना की परंपरा एवं सेठ गोविंददास के नाटक

रशिद नजरुद्दीन तहसिलदार

हिंदी विभाग, कर्मवीर हिरे महाविद्यालय,
गारगोटी, ता. भुदरमड, जि. कोल्हापूर.

सारांश:

हिंदी नाटय साहित्य में राष्ट्रीय भावना की परंपरा काफी प्रदीर्घ है । राश्ट्र के प्रति आस्था एवं निष्ठा रखने का भाव हर युग में, हर राष्ट्र में पाया जाता है । हिंदी नाटय साहित्य में भारतेंदु काल से यह प्रवृत्ति अधिक बलवान हुई । किंतु उसके पहले भी लिखे नाटकों में राष्ट्रीय भावना के अंश पाए जाते हैं । भारतेंदु कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना पर्याप्त मात्रा में मिलती है । राष्ट्रभक्ति के साथ–साथ ब्रिटीश शासन के विरोध में असंतोष एवं विद्रोह की भावना इन नाटकों में मुख्य रुप से पायी जाती है । अतीत की स्मृतियॉ हमेशा इन नाटककारों को उद्वेलित करती रही है । गौरवपूर्ण अतीत के माध्यम से उदात्त चरित्रों की सृष्टि कर महान व्यक्तित्वों के आदर्शों की प्रतिष्ठापना नाटकों में की गई है । पराधीनता के बोध से निराश एवं हताश हुई जनता को एक सू. में बॉधकर स्वराज्य की मॉग इस युग के नाटकों में पायी जाती है ।

प्रस्तावना :

प्रसादकालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना में वृध्दि हुई है । आंदोलनों की पृष्ठभूमि के कारण इस काल में सारे राष्ट्र में देशभक्ति का स्वर गुँज उठा था । हर देशवासी में राष्ट्र की आजादी की भावना तीव्र हो उठी थी जिसके लिए वे क्रांति करने के लिए तैयार हुए थे । वर्तमान दुर्दशा को मिटाने तथा स्वाधीनता की भावना को साकार बनाने के लिए इस युग के नाटककारों ने राष्ट्रीय ऐक्य की आवश्यकता पर बल दिया है । गांधीवाद के सैध्दांतिक पक्ष की अभिव्यक्ति इस युक के नाटकों की अलग विशेषता रही है । प्रसादोत्तर कालीन नाटकों मे राष्ट्रीय भावना विविध पहलुओं के साथ चित्रित हुई है । इस युग में देश को आजाद बनाने के लिए सक्रिय एवं क्रांतिकारी प्रयत्न हो रहे थे । महात्मा गांधीजी ने अहिंसक मार्ग से विविध आंदोलनों के सहारे ब्रिटीश शासन पर दबाव बढाया था । सारे राष्ट्र में अंग्रेजों के शोशण के साथ–साथ पूँजीपतियों के शोषण का तीव्र विरोध हो रहा था । राष्ट्र को स्वाधीन बनाकर उसके सुरक्षा संबंधी भावों की अभिव्यक्ति इस युग के नाटकों की महत्वपूर्ण विशेषता रही है । राष्ट्र के उन्नयन हेतु जिन आदर्श तत्वों की आवश्यकता थी उनकी पूर्ति करने का प्रयास इस युग के नाटककारों ने की है । राष्ट्रीय भावना की परंपरा में सेठ गोविंददास का स्थान अक्षुण्ण है । वे ऐसे प्रखर राष्ट्रभक्त है जिन्होंने व्यक्तिगत सुख सुविधाओं को त्यागर राष्ट्र के लिए आत्मोसर्ग किया है। उनका संपूर्ण नाटयसाहित्य राष्ट्रीय भावना से प्रेरित दिखाई देता है । राष्ट्रीय भावना के विविध पहलु व्यापकता के साथ उनके नाटकों मे व्यक्त हुए हैं । अतः हिंदी नाटय साहित्य में राष्ट्रीय भवना की परंपरा एवं सेठ गोविंददास के नाटक आदि का विस्तृत विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य है । इसमे विविध कालखंडो के आधार पर विवेचन विश्लेशण कर इस परंपरा में सेठ गोविंददास के नाटकों के स्थान को अधोरेखित किया जाएगा ।

भारतेंदुकालीन नाटको में राष्ट्रीय भावना (सन 1858 ई. से. 1905 ई. तक) :

भारतेंदु के लेखन में विलक्षण प्रतिभा और अपूर्व शक्ति थी । भारतेंदु–साहित्य का निर्माण करनेवाले क्रांतिकारी कलाकार थे । उन्होंने नए युग का नेतृत्व किया था । ईन्होंने आम जनता में राष्ट्रीय भवना जगाने की कोशिश की । जब अंग्रेज सरकार के खिलाफ एक शब्द भी कहना अपराध माना जाता था, तब भारतेंदु ने अपने नाटकों द्वारा राष्ट्रीय भावना जागृत करनेका महत्वपूर्ण कार्य किया है । उनका यह साहस इतिहास में हमेशा सराहनीय रहेगा ।

भारतेंदु का काल अर्थात सन 1858 ई. के बाद का माना जाता है । सन 1857 ई. की क्रांति के पश्चात् भारतीय जनता का सीधा संबध ब्रिटीश पार्लमेंट से हो गया था । भारतीय जनता का असंतोष, अविश्वास तथा ब्रिटिश शासन की ओर से होनेवाले घृणा भाव को मिटाने के लिए राणी व्हिक्टोरिया ने अपने घोषणापत्र द्वारा शासन के प्रति उदारता, दया, धार्मिक सहिष्णुता आदि का आश्वासन दिया । घोषणा पत्र के कारण भले ही इस भारतीय जनता में नवीन आशा पल्लवित हो गई थी परंतू कुछ समय के पश्चात् सभी आशाऍ खाक बन गई थी । इसी परिस्थिति के चलते सन 1858 ई. में ' इंडियन नेशनल कॉग्रेस ' संस्था के निर्माण से लोगों में और नई आशाऍ जन्म लेने लगी । ' इंडियन नेशनल कॉग्रेस ' की स्थापना के संदर्भ में गुरुमुख निहाल सिंह कहते हैं , '' इंडियन नेशनल कॉग्रेस की स्थापना और राष्ट्रीय–आंदोलन के प्रारंभ के बारे में कितने ही कारण बताए जाते हैं । लाला लजपतराय के अनुसार इनमें से मुख्य कारण था प्रवर्तको की साम्राज्य को छिन्न होने से रोकने की तीव्र इच्छा । '' स्पष्ट है क्रांतिकारी लोग साम्राज्य को छिन्न–भिन्न होने से बचाना चाहते थे ।

भारतेंदु काल में सुधारवादी आंदोलनों के साथ कई छोटे–मोटे आंदोलन हुए जिन्होंने राष्ट्रीय भावना जागृत करने में मदद की । भरतेंदुकालीन नाटककार एक नवीनतम् और स्वस्थ दृष्टिकोण लेकर भारत देश और जाति के विशाल प्रांगण में प्रस्तुत हुए । इन्हीं नाटककारों के प्रवेश के साथ इस युग में नई चेतना, नई शिक्षा, नया दृष्टिकोण तथा पाश्चात्य विचारों का प्रसार तेजी से होने लगा । देशप्रेम से भरपूर,

Title : *हिंदी नाट्य–साहित्य में राष्ट्रीय भावना की परंपरा एवं सेठ गोविंददास के नाटक*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *रशिद नजरुद्दीन तहसिलदार* **yr:2013 vol:3 iss:3**

नवनिर्माण के उत्साह से प्रेरित तथा जन्मभूमि की सेवा करने की अदम्य लालसा ने राष्ट्रीय भावना की भूमिका प्रस्तुत कर दी । '' भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके युग के नाटककारों ने अपने चारों ओर के जीवन तथा भारतीय पुराणों तथा इतिहास से संवेदना स्वीकार की और जीवन को पुष्ठ कर जन–मन की वीणा से स्वर संकृत करने का सराहनीय प्रयास किया ।'' स्पष्ट है तत्कालीन नाटककारों ने साधारण जनता को केंद्र में रख कर अपना कार्य किया है ।

भारतेंदुकालीन नाट्य साहित्य में नवउन्मेश की भावना मुखरित हो उठी थी । काल के नाटककारों ने अपने नाटकों में राष्ट्रकल्याण की भावना तीव्र रुप से प्रकट की । परिणाम स्वरुप तत्कालीन समय में स्वदेश संगीत की लहर–सी दौड गई । भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा इस काल के साहित्य का मार्ग निश्चित हुआ था । अतः इसी कारण भारतेंदु को ही इस नवउत्थान काल का नेता कहा जाने लगा । इसिलिए यहॉ भारतेंदुकालीन नाट्य साहित्य में अंतर्भूत राष्ट्रीय भावना के तत्वों का विवेचन करना अनिवार्य बन जाता है ।

स्वराज्य की मॉग :

प्रसादयुगीन नाटकाकार सिर्फ शासन सुधार नहीं चाहते थे बल्कि वे सारा स्वराज्य चाहते थे । इन नाटककारों ने कभी प्रत्यक्ष रुप से तो कभी प्रतीकात्मक ढंग से स्वराज्य की मांग की है । प्रसाद के साथ–साथ तत्कालीन युग के अन्य कई नाटककारों के नाटकों में स्वराज्य प्राप्ति की भावना को हम देख सकते हैं । देश की पराधीनता को देखकर इन नाटककारों के मन में पीडा एवं वेदना जागृत होती है जो इन नाटकों के माध्यम से बार–बार प्रकट हुई है । जयशंकर प्रसाद अपनी यह पीडा ' चंद्रगुप्त' नाटक में अभिव्यक्त करते हैं '' पराधीनता से बढकर विडंबना और क्या है ? उनका मानना है कि सृष्टि का हर जीव स्वतंत्र है भारतीयता अब किसी भी हालत में पारतंत्र्य की बेडियों में नही जकडी रहेगी । स्वाधीन देश ही अपना विकास कर सकता है ।'' प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि अगर देश का विकास हो तो पहले उसे पराधीनता की बेडियों से मुक्त करना होगा ।

लक्ष्मीनारायण मिश्र भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में विश्वास करनेवाले ऐसे नाटककार हैं जिनकी नजर में स्वराज्य की अनिवार्यता सतत झलकती है । उस काल का हर नाटककार स्वराज्य की मॉग की अभिव्यक्ति देना अपना आद्य कर्तव्य समझता था । उनका उद्देश्य स्वराज्य की स्थापना मात्र था। जिसके लिए वह सर्वतोपरि सहाय्यता करते हुए नजर आते है । श्री राधास्वामी सहाय के ' स्वराज्य ' नामक नाटक में वर्तमान भारत की दुर्दशा, स्वराज्यं एवं स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तथा स्वराज्य प्राप्ति की साधनों का विवेचन किया है । उस काल के नाटककारों को यह विश्वास था कि स्वराज्य अब दूर नहीं है । किसी भी हालत में अब स्वराज्य की प्राप्ति करनी है । बदरीनाथ भट्ट ने 'वेनचरित्र 'नाटक में कहा है कि '' स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है जैसे किसी का मन या बुद्धि नहीं छीनी जा सकती वैसे ही किसी की स्वतंत्रता भी नहीं छीनी जा सकती ।'' स्पष्ट है स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है और वह उससे ज्यादा समय के लिए दूर नहीं रह सकती । 'दुर्गावती' नाटक में स्वतंत्रता के लिए अपनी जान न्योछावर करने का संदेश हमे मिलता है ।' प्रताप–प्रतिज्ञा ' नाटक में महाराणा प्रताप का देश को स्वाधीन कराने का प्रयास निश्चय ही सुखद है । कहना सही होगा कि प्रसादकालीन नाटककारों ने देश की स्वतंत्रता को अहम स्थान देकर उसकी अभिव्यक्ति को अपने नाटकों में महत्वपूर्ण स्थान दिया है ।

एक राष्ट्र की कल्पना :

प्रसादकालीन नाटककारों ने स्वतंत्र और संगठित राष्ट्र की कल्पना की है । उनके अधिकांश नाटकों में एक राष्ट्र की धारणा स्पष्ट रुप से उद्घाटित हुई है । भारत विविध प्रदेशों के संगठन से बना हुआ देश है । हर प्रदेश की अपनी विशिष्ट परंपरा, सभ्यता एवं संस्कृति होती है । जब तक हर राज्य अपनी सीमा में नहीं बल्कि राष्ट्र की सीमा में खुद को आबद्ध नहीं करता तब तक देश का विकास संभव नही हो सकता । हिमालय से लेकर अंतिम द्विप तक फैले हुए इस राष्ट्र को एक छत्र में लाने की कोशिश प्रसादकालीन नाटककारों की प्रमुख उपलब्धि मानी जाएगी । जयशंकर प्रसाद के ' चंद्रगुप्त ' नाटक में संपूर्ण आयावर्त के भूभाग को अपना देश समझने की कोशिश ही देश को संगठित करने की कोशिश मानी जा सकती है । सभी अगर अपने सीमित राज्य को राश्ट्र समझने लगे तो राष्ट्रीय विकास एवं संरक्षण संभव नही है और इसी कारण एक राष्ट्र की कल्पना प्रसादकालीन नाटककारों में उभरती हुई दिखाई देती है । यही कल्पना प्रसादकालीन नाटककारों को अन्य नाटककारों से अलग दर्शाती है ।

जयशंकर प्रसाद की तरह तत्कालीन अन्य नाटककारों में भी एक राष्ट्र की कल्पना विद्यमान है। सभी को विश्वास है की संगठित राष्ट्र के माध्यम से ही विदेशी आक्रमाणों से देश की सुरक्षा संभव है । लक्ष्मीनारायण मिश्र के 'अशोक' नाटक में देश की विघटनकारी प्रवृत्तियों से देशवासियों को सचेत करने की कोशिस की गई है । लक्ष्मीनारायण मिश्र कहते है – '' यदि आज भारत टुकडों में विभक्त हो जाए तो कल उसकी जागती हुई सभ्यता सो जाएगी और फिर कभी जागेगी या नहीं, इसमें संदेह है । आप लोंगो के स्वार्थ से, आप लोगों के सुख से इस आर्य जाति का स्वार्थ और सुख कहीं अधिक गुरुतर है। '' स्पष्ट है नाटककार भारत को विभक्त नहीं करना चाहता । एक राष्ट्र की संकल्पना यहॉ परिलक्षित होती है । हरिहर प्रसाद के ' भारत पराजय ' नाटक में विदेशियों से देश की सुरक्षा करने का संकल्प व्यक्त किया है । प्रसादकालीन नाटककारों के नाटकों में अपने राष्ट्र के प्रति आस्था एवं राष्ट्रभिमान कूटकूटकर भरा हुआ नजर आता है ।

आत्मबलिदान की भावना :

प्रसादकालीन नाटककारों ने आत्मबलिदान की भावना को विशेष रुप में अभिव्यक्ति देने की कोशिस की है । प्रसादकालीन ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास की वीर–कथाओं को आधार मानकर उस काल के वीरों का तथा उनके वीरता पूर्ण बलिदान की प्रशंसा कर उन्हें सराहा गया है । तत्कालीन नाटकारोंने अपने नाटकों के लिए ऐसे पात्रों का चयन किया है कि जिन्होंने राष्ट्र के लिए आत्मबलिदान दिया है । जनमेजय के ' नागयज्ञ ' नाटक में नाग जाति देशहित के लिए तथा राष्ट्र के रक्षण हेतु किस तरह आत्मबलिदान देती है, इसका मार्मिक अंकन हुआ है । ' स्कंदगुप्त ' नाटक में हर जगह पर देश तथा जाति के लिए आत्मोसर्ग की अभिलाशा सुंदर ढंग से प्रतिपादीत हुई है । ये सारे चित्र राष्ट्राभिमान तथा आत्मसम्मान की रक्षा को महत्व देते हुए दिखाई देते है ।

' प्रतिप–प्रतिज्ञा ' नाटक में महाराणा प्रताप ने चितौड के उद्धार के लिए स्वाधीनता के यज्ञ में प्राणाहुति देने का उल्लेख मिलता है । चतुरसेन शास्त्री के ' उत्सर्ग ' नाटक में परेवसिंह अपनी वाग्दत्ता पत्नी अखिला से कहते है कि '' हमारा जीवन, हमारी मुत्यु, हमारा लहू और हमारा शव हमारे लिए नहीं हमारे देश के लिए अखंड मंगलमय हो । प्रत्येक वीर को अपना प्राण मंगल देश और आन के नाम पर विसर्जित कर देना चाहिए ।'' स्पष्ट है परेवसिंह अपने देश के लिए प्राणों को निछावर करने की तैयारी दिखाते है । कहना सही होगा कि प्रसादकालीन नाटककारों ने तत्कालीन ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से त्याग और बलिदान की भावना को सर्वश्रेष्ठ माना है । उनका मानना था कि कर्तव्य, स्वाधीनता तथा रक्षा के लिए अपने प्राणों का त्याग करनेवाला चरित्र ही स्वाधीनता आंदोलन की दृष्टि से उपयुक्त सिद्ध होगा ।

गांधीवादी विचारों की अभिव्यक्ति :

प्रसादकालीन नाटककारों में प्रमुख रुप से गांधीवादी विचारों का पुरस्कार किया हुआा दिखाई देता है । महात्मा गांधीजी ने भारत के साथ–साथ समस्त विश्व में भी सत्य, अहिंसा और प्रेम का आदर्श प्रस्तुत कर मानवता का दिव्य संदेश जन–जन तक पहूँचाया है । हिंसा से नहीं बल्कि अहिंसा के मार्ग से हृदय परिवर्तन की नीति अपनाकर सारी मनुष्यता में सकारात्मक सोच का प्रसार करने की बात इन नाटकों में अभिव्यक्त हुई है । दबाव से नहीं बल्कि मनुष्य में अंतरिक परिवर्तन के माध्यम से संस्कारों में वृद्धि करना उचित है । महात्मा गांधीजी की सोच को प्रसादकालीन नाटककारों ने आगे बढाते हुए संपूर्ण मानवता के कल्याण को अहम स्थान दिया है । महात्मा गांधीजी ने जिस व्यापक, उदार और विश्वशांति के संदेश को प्रसारित किया है उस संदेश को प्रसादकालीन नाटककारों ने अधिक सशक्तता के साथ अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है । इन नाटककारों पर गांधीजी के व्यक्तित्व और सिद्धांतो का पर्याप्त मात्रा में प्रभाव पडा हुआा परिलक्षित होता है । जयशंकर प्रसाद के ' विशाख ' नाटक के प्रेमानंद ने सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया और शांति का संदेश दिया है । प्रेमानंद कहते हैं – '' मै शाश्वत संघ का अनुयायी हूँ और प्रेम की सत्ता का विश्वभर मे प्रचार करना मेरा लक्ष्य है ।'' यहॉ प्रेमानंद गांधीजी के प्रेम मार्ग को अपनाता हुआ नजर आता है । प्रसादकालीन नाटककारों ने महात्मा गांधीजी की तरह विश्वशांति तथा ' वसुधैव कुटूंबकम् ' की भावना में विश्वास प्रकट किया है । समस्त मानव के कल्याण की अभिव्यक्ति उनके नाटकों का केंद्रिय विशय रही है । लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटक 'अशोक' में कलिंग युद्ध के पश्चात् भयंकर हिंस्त्र दृष्यों से उद्वेलित होकर सम्राट अशोक अहिंसा का मार्ग धारण कर बौद्ध धर्म गृहण करता नजर आता है और सारे विश्व में मानवता तथा प्रेम का प्रचार करता है । नाटककार इंद्र वेदालंकार के नाटक में भी महात्मा गांधीजी के विचारों का प्रस्तुतीकरण हुआ है । कहना सही होगा कि प्रसादकालीन नाटककारों पर महात्मा गांधीजी के उच्च विचारों का काफी गहरा प्रभाव है जिसकी अभिव्यक्ति समय–समय पर नाटकों में दिखाई देती है ।

प्रसाद कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना (सन 1906 से 1934 तक) :

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ मे अर्थात् इसके प्रथम पॉच वर्षों के अंतर्गत भारतीयों में अंग्रेजी शासन के प्रति विरोध प्रबल रुप में खडा हुआ था । अंग्रेज शासन के प्रति विरोध के लिए कई कारण उपस्थित थे । अंग्रेज शासन के विरोध में भारतीयों का स्वातंत्र्य आंदोलन जारी था । सन 1905 यह वर्ष भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

भारतेंदु युग में राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण हुआ था । 19 वीं शताब्दी के अंत में कॉग्रेस समिती की स्थापना आदि के कारण राष्ट्रीय भावना ने भारतीयों के हृदय में अपना स्थान प्राप्त कर लिया था । परंतु बीसवीं सदी में कॉग्रेस में जीवन और जागृति के विकास के साथ–साथ राष्ट्रीयता का भी समुचित विकास हुआ । प्रसाद कल में राष्ट्रीयता के सांस्कृतिक और राजनीतिक दोनों पक्षों की अभिव्यक्ति मिलती है ।

भारतेंदु काल में स्थित ब्रिटिश शासन तथा उनका पक्षपातपूर्ण व्यवहार, अकाल, महंगाई, भ्रष्ट राजनीति, देशी, उद्योगधंदों का पतन आदि के कारण भारतीयों के मन में असंतोष की ज्वाला भडक उठी थी तथा उसने उक्र रुप धारण कर लिया था। सन 1906 ई. से सन् 1934 ई. तक देश की स्वतंत्रता को लेकर कई आंदोलन हुए । भारतीयों द्वारा हुए कई आंदोलनों को अंग्रेजों द्वारा विरोध किया गया तथा उसे कुचला गया। परंतु भारतीय अंग्रेजों की इस कुटनीति से चुप नहीं रहे । उन्होंने गुप्त तथा हिंसात्मक रुप से आंदोलन कर उनका जबाव दिया । इसी युग में गांधीजी स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख नेता के रुप में सिद्धहस्त हुए तथा उन्होंने कई अधिवेशन तथा आंदोलनों के माध्यम से देश को स्वतंत्र बनाने का प्रयास किया । इन्हीं प्रयत्नों के कारण गांधीजी ने कई आंदोलन किए, अनशन किए तथा स्वतंत्रता के लिए वे जेल भी चले गए ।

स्वाधीनता आंदोलन के इसी युग में स्वदेशी आंदोलन, क्रांतीकारियों द्वारा किए आंदोलन, मुस्लिम लीग अधिवेशन, लखनौ अधिवेशन, होमरुल लीग की स्थापना, प्रथम विश्वव्यापी महायुद्ध, रौलेट, ॲक्ट का भारत में जारी होना, जालियनवाला बाग हत्याकांड, सरकार के विरोध असहयोग आंदोलन, सायमन कमिशन के विरोध में हडताल, सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि कई घटनाऍं भारतीय इतिहास में घटित हुई हैं । जिनके कारण भारत देश के प्रमुख नेतृत्व के रुप में उपस्थित गांधीजी तथा अन्य नेताओं को आमरण अनशन एवं आंदोलन करता पडा । साथ ही जेल भी जाना पडा परंतू वह नहीं रुके । जनता में एक व्यापक और जबरदस्त आंदोलन प्रारंभ हुआ । इस कारण सरकार ने भी कठोरता से दमन कार्य प्रारंभ किया परंतु सरकार की उत्तरोत्तर नग्न और उग्र रुप धारण करनेवाली दमननीति के कारण नवजागृत चेतना भी व्यापक और विस्तृत, गहरी होती गई । इस दमननीति से पोशण पाकर राष्ट्रीय अभ्युत्थान उलटा बढने लगा । इस प्रकार इस युग में स्वतंत्रता के लिए जनता में तीव्र आंदोलन की भावना थी । इससे यह स्पश्ट होत है कि भारतेंदु काल में राष्ट्रीय भावना भले ही अपने शैशवावस्था में थी लेकिन प्रसाद काल में उसका विकास हुआ ।

भारतेंदु युग में प्राप्त नवचेतना को, इस प्रसाद काल में प्राचीन संस्कृति के उत्थान तथा नई सामाजिक चेतना निर्माण के उपलक्ष्य में आयोजित करने का सराहनीय प्रयास किया गया है । भारतेंदु काल में निराशा के कारण आशावाद का अभाव स्पष्ट रुप से परिलक्षित होता है । परंतु आलोच्यकालीन साहित्य आशा–आकांशा, कर्म, जीवन, बल और बलिदान से ओतप्रोत प्रतीत होता है । प्रस्तुत काल के नाटकों में पराधीनता की दुर्बलता के प्रति क्षोभ तथा आक्रोश की भावना दृष्टव्य थी । परंतु शोशक और पीडादायक शासन के प्रति हिंसात्मक तथा उग्रता का भाव स्पश्ट नहीं होता । सौम्यवाणी में तत्कालीन काल में राश्ट्रीयता अभिव्यक्त नजर आती है ।

सन् 1906 इ. से सन 1934 ई. तक के युग में जयशंकर प्रसाद को आलोच्यकालीन नाटक साहित्य के नेता कहा जा सकता है । क्योंकि प्रसाद के समान अन्य किसी भी तत्कालीन नाटककार में राष्ट्रीयता की पूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त नहीं होती । प्रमुख रुप से देखा जाए तो प्रसाद के अधिकांश नाटकों का विषय भारतवर्ष ही रहा है । डॉ. रामरतन भटनागर के अनुसार '' प्रसाद के लिए देश उससे कहीं अधिक सत्य है जिस देश की पूजा हमारे राजनीतिक नेता करते हैं । भारत की सारी प्रकृति, भारत की सारी आध्यात्मिक निश्ठा, भरत के नगर–ग्राम, भारत के नर–नारी, भारत के कला–विज्ञान के सपने, सब उनके स्वप्न में कुछ ऐसी सतरंगी रंगो ले ली जाती है कि उनकी देश की कल्पना आश्विक बन जाती है ।'' इस प्रकार का मंतव्य प्रसाद के विषय में प्रकट किया जाता है । प्रसादकालीन नाटकों में अंकित राष्ट्रीय भावना का अध्ययन निम्नानुसार किया गया है ।

प्रसादोत्तर कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना (सन् 1935 से 1947 तक) :

प्रसादोत्तर काल में भरतीय जनमानस पूरी तरह से अंग्रेजों के विरोध में था । सारे देश में विविध प्रकार के आंदोलनों की हवा बहने लगी थी इसी समय महात्मा गांधीजी जैसे महान नेता का प्रभाव सारे देश पर छाया हुआ था । सन 1942 ई. में गांधीजी ने भारत छोडो आंदोलन शुरु किया । गांधीजी ने देशवासियों को विशुद्ध अहिंसात्मक असहयोग के आधार पर अंग्रेजों का विरोध करने की सलाह दी । सारे देश में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की भावना प्रकट हो रही थी । इस सारे वातावरण में राष्ट्रीय एकात्मता तथा राष्ट्रभक्ति यह एकमात्र मूलमंत्र बन गया था । राष्ट्रीय भावना तथा देशप्रेम से भरे माहौल को इस काल के नाटककारों नें सशक्तता के साथ अभिव्यक्ति दी है । इसके अलावा इन्होंने

तत्कालीन माहौल को अनुकूल बनाने हेतु अनेक सकारात्मक प्रयास अपने नाटकों के माध्यम से किए हैं । तात्पर्य प्रसादोत्तर नाटकों में राष्ट्रीय भावना चरम बिंदु तक पहुँची हुई दिखाई देती है । जिसकी मीमांसा निम्नलिखित उपशीर्षकों के जरीए करना उचित होगा ।

राष्ट्रीय एकता की भावना :

इस युग की राजनीतिक परिस्थितीयॉ देखने से यह पता चलता है कि इस युग में भारत में अनेक राजा–महाराजा एवं राज्य थे जिसमें आपसी वैमनस्य था । वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थ हेतु अंग्रेजों से मिले रहते थे । हिंदू और मुसलमानों में भी हमेशा सांप्रदायिक झगडे होते रहते थे । इस एकता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम में बाधाएँ आ रही थीं तो अंग्रेज इस स्थिती का पूरा लाभ उठा रहे थे । ऐसे माहौल में महात्मा गांधी जैसे अनेक नेताओं ने राष्ट्रीय एकता पर बल दिया । इस भावना का प्रभाव इस युग के नाटककारों पर भी पडा और उन्होंने अपने नाटकों में एकता की भावना को अभिव्यक्ति देने का अथक प्रयत्न किया ।

इस युग के प्रसिद्ध नाटककार चंद्रगुप्त विद्यालंकार ने अपने ' अशोक 'नाटक में एकता की भावना पर बल दिया है । इस नाटक के माध्यम से वे यह संदेश देता चाहते हैं कि यदि हम सभी लोग मिलकर रहेंगे, संगठित होकर संघर्ष करेंगे तो हमारी जीत निश्चित है । लगभग इसी बात को सभी नाटककारों ने उद्घाटित किया है । हरिकृष्ण प्रेमी ने ' प्रतिशोध ' नाटक में एकता की भावना को ध्यान में रखकर व्यक्तिगत स्वार्थ को त्याग देने का संदेश दिया है । हरिकृश्ण प्रेमी ने ' शीषदान ' नाटक में संपूर्ण राष्ट्र को एक होने की अपील की है । प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्र तात्या टोपे के माध्यम से सारे देश को एकता के सूत्र में बॉधने की कोशिश की है ।

डॉ. दशरथ ओझा ने आने ' स्वतंत्र भारत ' नाटक में बिखरी हुई शक्तियों को एकसूत्र में पिराने का काम किया है । इस समय महात्मा गांधी जी एकता का संदेश दे रहे थे । इस नाटक से विदित होता है कि नाटककार पर गांधीजी का प्रभाव पडा है और नाटककार ने उनके व्यक्तित्व को तथा उनके महान विचारों को अपने नाटक में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । सेठ गोविंददास ने अपने नाटक ' शशिगुप्त ' में कहा है कि यदि भारत के सारे राजा अर्थात् सारे राज्य एक हो जाए तो समस्त भारत में एकता स्थापित हो सकती है और अंग्रेजो को देश से बाहर निकाला जा सकता है । कहना सही होगा कि इस युग के अनेक नाटककारों ने अपने नाटकों में एकता की भावना पर विशेश बल दिया है ।

राष्ट्रीय भावना की परंपरा में सेठ गोविंददास का स्थान :

राष्ट्रीय भावना की परंपरा में सेठ गोविंददास का स्थान विशिश्ठ है । सेठ गोविंददास पूरी तरह से राजनीतिक जीवन व्यतीत करनेवाले नाटककार होने के कारण उनके सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक जीवन में राष्ट्रीयता की भावना निश्चित तौर पर मिलती है । उन पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव होने के कारण उनकी सारी प्रवृत्तियॉ राष्ट्रीय भावना से प्रेरित दिखाई देती है । उन पर समाजवादी एवं प्रगतिवादी विचारधाराओं का भी प्रभाव पडा जिसने राष्ट्रयीता को नया रुप दिया। सेठ गोविंददास की राष्ट्रीय भवना राजनीति तथा साहित्य दोनों क्षेत्रों में समान रुप से अभिव्यक्त हुई है । उन्होंने देश में व्याप्त असंतोष की प्रत्यक्ष अनुभूति ली थी । परिणाम स्वरुप अन्य नाटककारों की अपेक्षा इनके नाटकों में अधिक तीव्रता तथा राष्ट्रीयता की प्रबलत्म भावना परिलक्षित होती है। शायद इसक कारण उन्होंने उदात्त एवं व्यापक कोटि की राष्ट्रीय चेतना से भरे नाटकों का सृजन किया है ।

भारतमाता के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रध्दा का भाव रखने का धर्म सेठ गोविंददास ने बखूबी निभाया है । उनके 'हर्ष 'नाटक में अपने देश के प्रति अभिमान की भावना व्यक्त हुई है । सेठ गोविंददास के ' कर्तव्य , ' विकास ' एवं ' कर्ण ' नाटक स्वर्णिम अतीत की गौरवगाथा प्रस्तुत करते है। ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से नाटककार ने भावी भारत भूमि का सुनहरा सपना संजोया है । महात्मा गांधीजी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने ऐसे नाटक लिखे हैं जिनमें विश्व बंधुता तथा वसुधैव कुटूंबक्म संकल्पना साकार की है । अतीत भारत की गरिमा और महत्ता के सामने सेठ गोविंददास को वर्तमान देश की दशा अत्यंत दुर्दशापूर्ण, अपमान जनक लगती है । देश की यह अवस्था देखकर उन्हें दुःख होता है । ' कुलीनता ' नाटक में सेठ जी ने जाति प्रथा पर कठोर आघात किया तथा उससे विरोध प्रकट कर सच्ची राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है । उनके 'दलित कुसम ' तथा ' पतित सुमन 'नाटकों में स्त्रियों पर किए गए सामाजिक अत्याचारों पर आक्रोश प्रकट किया है । उनके ' पाकिस्तान ' नाटक में देशभक्त महफूज खॉ अंग्रजी शासन के अन्याय–अत्याचार और शोषण से त्रस्त भारतीय जनता का सही रुप प्रस्तुत करता है । वह कहता है '' पर ऐसर विदेशी लूटनेवाली डाकू सरकार नहीं, जिसका काम उस देश का खून अर्थात् अर्थ को चूस कर विलायत को लाल बनाना है। जिसने यहॉ के अन्नदाता किसानों को मुट्ठी–मुट्ठी अनाज के लिए मोहताज कर भिखमांग बना दिया है ।'' कहना सही होगा कि सेठ गोविंददास सच्चे अर्थो में देशभक्त थे जिन्हें देश के किसानों तथा गरीबों की स्थिती का पता था ।

सेठ गोविंददास ने विविध विषयों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को साकार किया है । उनके ' प्रकाश ' नाटक में विदेशी संस्कृति के बढते हुए दुष्परिणाम की चिंता प्रकट हुई है । उनका मानना था कि भारत की प्रकृति तथा व्यावहारिक स्थिती विदेश से भिन्न है । इस देश का प्राचीन इतिहास है, प्राचीन धार्मिक, ऐतिहासिक आदि सिद्धांत है, प्राचीन संस्कृति है उसे पूर्ण रुप से मिटाकर उसपर पश्चिमी सिद्धांतो का लादना असंभव है । उनके ' मित्र ' नाटक में वर्तमान देश की स्थिती को प्रस्तुत किया है । सेठ गोविंददास ने ' सिद्धांत स्वातंत्र्य ' नाटक में अनेक राजनीतिक आंदोलनों का तर्कपूर्ण ढंग से समर्थन करके राष्ट्रीय विकास में योगदान दिया है । ' पूण्यफल ' नाटक में आजादी का दीवना लक्ष्यसिंह देश की पराधीनता मिटाने के लिए उत्सुक दिखाई देता है । वह कहता है '' वृद्ध हो या युवक, राष्ट्र और मातृभूमि के प्रति सब का समान धर्म होता है । जब मातृभूमि संकट से ग्रस्त हो तब वृद्ध्द या युवक सब को समान रुप से उनके उद्धार का प्रयत्न करना चाहिए ।'' स्पष्ट है कि सेठजी ने ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से आत्मबलिदान की ओजस्विनी भावना को व्यक्त किया है । उनके 'कुलीनता' नाटक में राष्ट्र की सुरक्षा को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है तो 'प्रतिशोध' नाटक में राष्ट्रीय एकात्मता को वाणी देनेका कार्य किया है । जातीयता के आधार पर देश का विभाजन करने का विरोध करनेवाले सेठ गोविंददास ने हिंदू और मुस्लिमों की एकता को महत्वपूर्ण माना है ।

सेठ गोविंददास गांधीजी के विचारों के उपासक थे । उनके बहुतांश नाटक गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है । उनके ' विकास ' नाटक में उन्होंने गांधीजी के प्रति दृढ आस्था प्रकट करते हुए उनके उच्च आदर्शों की ओर विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है । सार रुप में कहना होगा कि सेठ गोविंददास राष्ट्रीय भावना से प्रेरित ऐसे गांधीवादी नाटककार हैं जिन्होंने आने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय विचारधारा को बल दिया है । राष्ट्रीय विकास तथा सामाजिक एकता का पुरस्कार कनेवाले सेठ जी ने राजनीति और साहित्य दोनों क्षेत्रों में समांतर रुप से राष्ट्रीय भावों का प्रचार किया है । उनके ऐतिहासिक नाटकों में ऐसे पात्रों की सृष्टि हुई है जो त्याग और आत्मबलिदान के द्वारा राष्ट्रभक्ति का उच्च आदर्श स्थापित करते है । उनके नाटकों में चित्रित हुए अधिकांश पात्र सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए दिखाई देते है । हिंदी नाटक साहित्य में अनेक विभूतियों ने इस परंपरा को वृद्धिंगत किया है । इसी परंपरा को और अधिक पुष्ट करने तथा विकास की नई दिशाएँ प्रदान करने में सेठ गोविंददास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इस बात को नकारा नही जा सकता ।

निष्कर्ष :

भारतेंदु कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना का रुप व्यापकता के साथ प्रकट हुआ है । देशभक्ति, अतीत का गौरवगान, तत्कालीन भ्रश्ट शासन व्यवस्था के प्रति असंतोश, अपनी भाशा, संस्कृति तथा धर्म के प्रति अगाध निश्ठा जैसे अनेक राष्ट्र निर्माणात्मक भाव इस काले के नाटकों में दिखाई देते हैं । इस युग का नाटककार अपने समय के प्रति बडा सजग दिखाई देता है । रुढिग्रस्त, निश्क्रिय और मानसिक दासता में जकडी हुई जनता में विश्वास जगाने का काम इन नाटककारों ने किया । पाश्चात्य सभ्यता से उत्पन्न दूषित प्रभाव भ्रष्ट राजनीति के कारण उन्हें सुधारवादी एवं राष्ट्रीय विचारों की ओर प्रवृत्त होना पडा । इस काल के नाटककारों ने देशभक्ति के साथ–साथ देश की दशा का चित्रण भी आवश्यक किया है । भारतेंदु कालीन राष्ट्रीयता में संस्कृति की एकता के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता और अखंडता का समावेश होता है । वस्तुतः भारतेंदु युग राष्ट्रीयता की दृश्टि से प्रथम चरण माना जाएगा । इस युग में व्यापक रुप से चित्रण होने के बावजूद राष्ट्रीयता के समग्र रुपों के दर्शन नहीं होते फिर भी देश के प्रति श्रद्धा का अत्यंत उज्वल रुप प्राप्त होता है । राजनीतिक और सामाजिक भावनाओं को व्यक्त करने की प्रवृत्ति इसी युग से शुरु हुई है । इसी युग में धीरे–धीरे स्वाधीनता की भावना का आगमन होता है । कहना होगा कि इस युग में भारतीय राष्ट्रीयता की नींव धीरे –धीरे मजबूत हो रही थी ।

भारतेंदु कालीन राष्ट्रीयता प्रसाद काल में आकर और अधिक प्रखर होती गई । इस युग के नाटककारों के दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देता है । इस काल कें नाटकों में पूरी तरह से अंग्रेजों की दासता से मुक्ति तथा नवनिर्माण का स्वर स्पष्ट रुप से दिखाई देता है । इस युग के नाटकों में राष्ट्रीय विकास की आकांक्षा प्रबल रुप से प्रकट हुई है । प्रसादकालीन नाटकों ने भारतीय समाज जीवन में अपूर्व क्रांति की है । देशवासियों के मन में आत्मसम्मान और राष्ट्रीय गौरव की अभिव्यक्ति करने में इस युग के नाटक सफल सिद्ध हुए है । इस युग में कई ऐतिहासिक नाटक लिखे गए है । इन नाटकों के माध्यम से इतिहासकालीन ख्यातप्रिय पुरुषों का आदर्श समाज के सामने रखकर देश में राष्ट्रीय चेतना जगाने की कोशिश की है । समाज की ज्वलंत समस्याओं को इस युग के नाटककारों ने वाणी देने का महत्वपूर्ण काम किया है । भारतीय राष्ट्रीयता गांधीजी के व्यक्तित्व से सबसे अधिक प्रभावित है । मानवतावाद, विश्वबंधुत्व जैसे राष्ट्रीयता के विविध पहलुओं का उदय हुआ । गांधीजी के विचारों को नाटकों के माध्यम से अभिव्यक्ति देना राष्ट्रीय भावना की दृष्टि से अधिक श्रेयस्कर सिद्ध हुआ है । जातीय एकता का प्रयास तथा राष्ट्र के भविष्य के निर्माण की नई दिशाएँ इन नाटकों के माध्यम से निर्माण होने लगी है । अंत में कहना होगा कि प्रसादयुगीन नाटकों ने राष्ट्रीय भावना को बढावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

प्रसादोत्तर कालीन नाटकों में राष्ट्रीयता का चरम विकास हुआ है । इस युग के नाटककार राष्ट्रीय उद्धार की कामना के साथ–साथ अनेक सामाजिक प्रश्नों के साथ भी जुडे हुए दिखाई देते हैं। उन्होने सिर्फ समस्याएँ नही उठाई बल्कि उनके समाधान की खोज भी की है । एक दीर्घकालीन राष्ट्रीय संघर्ष के बाद विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने से सारे देश में चेतना का संचार हुआ था । स्वाभाविक है कि नाटककारों ने उत्साह के साथ देश की भावी नीतियॉं और भविष्य के सुनहरे सपनों के बारे में सोचना शुरु किया था । इस युग के नाटकों की यह विशेषता रही है कि इन नाटकों ने विश्वव्यापी मानव प्रेम की भावना समाविष्ट की । इन नाटककारों ने विश्वबंधुत्व का संदेश देकर समस्त मानव कल्याण की भावना को अभिव्यक्ति दी है ।

सेठ गोविंददास राष्ट्रीय भावना की परंपरा को प्रखर और तेजस्वी बनानेवाले ऐसे नाटककार हैं जिन्होने विश्वबंधुत्व, त्याग, समता, अहिंसा का गौरव किया है । राजनीति तथा साहित्य दोनों क्षेत्रों के समान रुप से राष्ट्रीयता की भावना प्रकट हुई है । उनके समग्र नाटकों में राष्ट्रीयता झलकती है । ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों से संबंधित उनके नाटक राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत दिखाई देते हैं । कहना होगा कि सेठ गोविंददास राष्ट्रीय भावना से प्रेरित नाटककारों की श्रृंखला में अपना अलग स्थान रखते हैं ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net